सार्वजनिक सम्पदा स्रोतों का ह्रास (पश्चिमी राजस्थान के समक्ष चुनौती)

* डॉ. वी.डी. दशोरा

परम्परागत रुप से पश्चिमी राजस्थान में ग्रामीण समाज प्राकृतिक वातावरण से मधुर संबंधो का आनंद लेते रहे। यह लोग प्राकृतिक वातावरण से प्राप्त विभिन्न स्त्रोतों जिन्हें सार्वजनिक संपदा स्त्रोत (Common Property Resaaource) कहा जाता है, से मिलने वाले उत्पादों पर अपने जीवन निर्वाह के लिए निर्भर रहते हैं।

सार्वजनिक संपदा स्त्रोत जो कि विकसित देशों में दुर्लभ मिलते है, निरंतर ह्रास के कारण पश्चिमी राजस्थान में भी दुर्लभता की ओर अग्रसर है अर्थात् सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों का निरंतर ह्रास हो रहा है। इस क्षेत्र में निर्वाह जीविका प्रदान करने वाले स्त्रोत के रुप में तथा पर्यावरणीय सत्ता बनाये रखने में सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस क्षेत्र में सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों से एक अर्थपूर्ण अनुपात में चारा, ईंधन तथा खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं और सूखे के समय तो सार्वजनिक संपदा स्त्रोत उत्पादों का संग्रह आय एवं रोजगार का महत्वपूर्ण स्त्रोत बन जाता है।

विडम्बना है कि इतने लाभ देने के बावजूद सार्वजनिक संपदा स्त्रोत गंभीर ह्रास की स्थिति का सामना कर रहे है। सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के इस ह्रास को रोकना पश्चिमी राजस्थान की अर्थव्यवस्था के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है।

पश्चिमी राजस्थान में सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों का निरंतर ह्रास हो रहा है।

1 सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के महत्व का आंकलन करना।
2 ग्रामीण गरीबों हेतु सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के महत्व पर प्रकाश डालना। 3 सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के ह्रास तथा इस ह्रास के लिए उत्तारदायी कारणों की व्याख्या करना।

मुख्यतया सम्पदा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– निजी और सार्वजनिक। निजी सम्पदा पर किसी व्यक्ति या परिवार का अधिकार होता है तथा इसके लाभों को वे ही प्राप्त करते हैं। सार्वजनिक सम्पदा की उपयोगिता किसी एक व्यक्ति या परिवार के अधिकार तक सीमित नहीं होती वरन् इस पर सम्पूर्ण समुदाय का अधिकार होता है।

सार्वजनिक सम्पदा को पुनः दो भागों में बाँटा जा सकता है– मनुष्य निर्मित तथा प्रकृति प्रदत्ता। यह प्राकृतिक सम्पदा संसाधन अत्यधिक आर्थिक महत्व रखते हैं। सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों (Common Property Resaaourcesaa) में उन सभी प्राकृतिक संसाधनों को शामिल किया जाता है जिनका उपयोग मानवीय कल्याण के लिए किया जा रहा हो तथा जिन पर किसी व्यक्ति का अधिकार न हो कर, सम्पूर्ण समूह का अधिकार होता है। सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों में जंगल, तालाब, सार्वजनिक चरागाह, नदियों एवं तालाबों के किनारे की जमीन, पहाड़, ऊसर या बंजर भूमि, अनाज गहने के मेंदान, झीलें, जलधारायें, नदियां, खनिज ईंधन, दलदल क्षेत्र, सार्वजनिक टीले आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इन सब संसाधनों पर समुदाय का स्वामित्व होता है। सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों को उन संसाधनों के रुप में परिभाषित किया जा सकता है, जिस पर एक समूह के लोगों को उपयोग का समान अधिकार प्राप्त हो तथा विशेषाधिकार हो कि वे अन्य समूहों को इनके उपयोग से वंचित कर सकें। सभी सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों के सैद्धान्तिक रुप से तीन महत्वपूर्ण लक्षण होते हैंः–

1 एक सुपरिभाषित समूह या समुदाय इन संसाधनों के उपयोग का विशेषाधिकार रखता है। 2 यह एक समूह में गैर–अपवर्जक होते हैं अर्थात् समूह के किसी भी सदस्य को इन संसाधनों के उपयोग से वंचित नहीं किया जा सकता है।
3 किसी उपयोगकर्ता द्वारा इन संसाधनों का उपयोग करने पर वह अन्य व्यक्तियों के लिए इनकी उपलब्धता को कम करता है।

एन. एस. जोधा के अनुसार ''सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत वे हैं, जिनका उपयोग सम्पूर्ण समुदाय द्वारा बगैर किसी स्वामित्व विशेषाधिकार या अधिकारों की अधिकता के किया जाये।''
ब्व्त्ेे को साधारण शब्दों में समुदाय के स्वामित्व के रुप में परिभाषित किया जा सकता है और यह समुदाय एक गाँव, एक जातीय कबीले, एक राष्ट्र के नागरिक, विश्व के मानव समुदाय के रुप में हो सकता है।

भारत में कुल भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में CPR भूमि सर्वाधिक राजस्थान में 32% है जो कि राष्ट्रीय औसत (15%), गुजरात (27%) और मध्यप्रदेश (22%) से अधिक है। इस बात के प्रमाण मिले है कि 19 वीं शताब्दी तक प्राकृतिक संसाधनों का 80% सार्वजनिक सम्पदा के अन्तर्गत आता था और केवल 20% हिस्सा निजी संसाधनों के रूप में प्रयोग किया जाता था। पश्चिमी राजस्थान में प्रकृति प्रदत्ता उपहारों में CPR's एक महत्वपूर्ण अवयव है। यह ग्रामीण परिवारों को जीविका प्रदान करने में अर्थपूर्ण भूमिका निभाते है तथा समतापूर्ण और साझेदारी युक्त विकास प्रक्रिया में भी योगदान देते है।

सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इन क्षेत्रों में रोजगार, आय–सृजन तथा सम्पत्ति निर्माण में CPR's महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। CPR's के अनेक लाभों के बावजूद इनकी उपेक्षा की गई क्योंकि मापन में आने वाली कठिनाईयों के कारण इनसें प्राप्त होने वाले लाभों का सही आंकलन सम्भव नहीं। हालांकि वर्तमान समय में CPR'ेे से प्राप्तियाँ उतनी अधिक नहीं रही है लेकिन इसका यक तात्पर्य नहीं कि CPR's अनुपयोगी है। CPR's के व्यापक महत्व को अग्र बिन्दुओं में स्पष्ट किया गया हैः–

1 सामाजिक तथा विकास समस्याओं से संबंधित संस्था Sangati के विश्लेषण के अनुसार ऐसे ग्रामीण परिवार जो CPR'sसे कुछ न कुछ अवश्य प्राप्त करते हैं उनका प्रतिशत 48 है। 2 CPR's के सभी अवयवों में सर्वाधिक मूल्य ईंधन लकड़ी के रुप में प्राप्त होता है। ग्रामीण परिवार अपनी ईंधन आवश्यकताओं का 58% तक CPR's से प्राप्त ईंधन लकड़ी से संतुष्ट करते हैं।
3 ग्रामीण परिवार ईंधन के अतिरिक्त अपनी चारे की आपूर्ति का भी एक बड़ा भाग CPR's से प्राप्त करते हैं। यह अपने चारे की आपूर्ति का 25% भाग CPR's से प्राप्त करते है। ग्रामीण पशुपालक परिवारों की CPR's पर निर्भरता उनके द्वारा CPR's से चारे के उपयोग के आधार पर मापी जा सकती है। पशुपालक परिवारों में 20% परिवार चराई हेतु CPR's का उपयोग लेते हैं, 13% परिवार CPR's से चारा इकट्ठा करते

*अर्थशास्त्र डॉ. वी.डी. दशोरा, व्याख्याता, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राज.)

हैं तथा 30% परिवार सार्वजनिक सम्पदा जल स्त्रोतों का उपयोग लेते हैं। 4 CPR's उत्पादों का संग्रह आय तथा रोजगार का महत्वपूर्ण स्त्रोत है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारिक आय का 14 प्रतिशत से 23 प्रतिशत तक CPR's से प्राप्त होता है। विभिन्न अध्ययनों एवं विश्लेषणों के आधार पर यह अनुमान लगाया की ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति परिवार CPR's से होने वाली प्राप्तियों का औसत वार्षिक मूल्य 693 रुपये है। 5 जब प्राकृतिक आपदाओं के कारण से उपज तथा आय प्राप्त करना संभव नहीं होता तो CPR'S निर्वाह जीविका प्रदान करने में अर्थपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूखे के समय यदि सरकारी सहायता को घटाकर देखें तो शेष आय में CPR'S का योगदान 42 प्रतिशत से 57 प्रतिशत तक होता है।

6 जिन गाँवों में ब्व्श्े का प्रबंधन सही ढ़ंग से किया गया, वहाँ CPR'S से अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ तथा सूखे के प्रभाव भी कमजोर हो गये। ऐसे गाँवों में पीने के पानी की समस्या उत्पन्न नहीं हुई तथा गोंद, रेशे, जंगली फल आदि CPR's उत्पादों पर आधारित उच्च आय सृजित करने वाले अनेक घरेलू उद्योग भी पनप गये। यह कहा जा सकता है कि सुप्रबंधित CPR's युक्त गाँवों में सूखे के समय में भी सरकारी सहायता एवं अनुदानों पर निर्भरता कम रही।

7 निजी सम्पदा भूमि आधारित कृषि में भी ब्व्श्े की पूरक भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। निजी कृषि हेतु आवश्यक कुल आगतों का एक बड़ा भाग CPR's से प्राप्त होता है।

8 CPR'S की अनुपस्थिति में खाद्यान्न उपज भूमि पशुओं के चारे हेतु चारा उपज भूमि में रुपांतरित हो जाती है। इससे खाद्यान्न उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा खाद्य समस्या अधिक गंभीर बन जाती है।

9 सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों का पर्यावरण से भी गहरा संबंध है। यह पेड़ों को कटाई से सुरक्षा प्रदान करते हैं, मिट्टी की उत्पादकता को बनाए रखते हैं, मिट्टी के कटाव को रोकते है, भूमिगत जल को रिचार्ज करते हैं तथा प्राकृतिक वनस्पति एवं जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करते हैं।

10 सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत सत्त विकास तथा सर्वसमावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह पयार्वरणीय तथा पारिस्थितिकीय संतुलन बनाऐ रखकर सत्त विकास में योगदान देते हैं। CPR'S गरीबी निवारण में योगदान देकर गरीबों को आर्थिक विकास की मुख्य धारा सें जोड़ देते है। समता एवं सर्वसमावेशी विकास की अवधारणा को मूर्त रुप मिलता है।

11 सार्वजनिक संपदा स्त्रोत सत्त् विकास तथा सर्व समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखकर सत्त् विकास में योगदान देते है। CPR's गरीबी निवारण में योगदान देकर गरीबों को आर्थिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ देते है और समता एवं सर्वसमावेशी विकास की अवधारणा को मूर्त रुप मिलता है।

भारत में CPR's पर अनेक अध्ययन हुये हैं और सभी अध्ययनों में इनके व्यापक महत्व को स्वीकार किया गया है। सभी अध ययन इस तथ्य पर सहमत हैं कि ग्रामीण भारत में एक गैर आर्थिक तथा गैर नगद अर्थव्यवस्था में संसाधन आधार प्रदान करने में CPR's लगातर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत एवं ग्रामीण गरीबः—अपने कमजोर संसाधनों के साथ गरीब वर्ग CPR'S पर अधिक निर्भर रहते हैं जबकि अमीरों की CPR's पर निर्भरता बहुत कम होती है। गरीब वर्ग प्रायः CPR's उत्पादों पर निर्भर रहते हैं और इसका श्रेष्ठ उदाहरण गरीबों द्वारा CPR'S से खाद, ईंधन, खाद्य एवं चारे का संग्रहण तथा सार्वजनिक उपयोगिताओं के रुप में इनका उपयोग है। राजस्थान में भूमिहीन श्रमिकों एवं छोटे किसानों में 30% CPR's खाद्य पदार्थों का ही उपयोग करते हैं। मध्यप्रदेश में यह निर्भरता 50% तक है। ग्रामीण गरीबों की आय का बहुत बड़ा अनुपात CPR'S से ही व्युत्पन्न होता है। अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु CPR'S पर गरीबों की निर्भरता का अंश बहुत ऊँचा होता है। यह संसाधन गरीबों की आधारभूत आवश्यकताओं तथा सामाजिक सुरक्षा की पूर्ति करते हैं।

यदि गरीबों की आय में CPR'S से प्राप्त आय का जोड़ दिया जाऐ तो उनकी आय सम्माननीय स्तर तक पहुँच जाती है। जोधा (1995) का मत है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आय तथा उपभोग की असमानता जो कि सांख्यिकीय समंको से ज्ञात होती है कि तुलना में वास्तविक असमानता बहुत कम है। ब्व्श्े ग्रामीण आय असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण सहायता देते हैं, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में गिनि गुणांक के नीचे मूल्य से स्पष्ट होता है।

जब गरीबों के पास आय के वैकल्पिक स्त्रोत उपलब्ध नहीं होते तो गरीबों को आय तथा रोजगार का महत्वपूर्ण भाग CPR's से प्राप्त होता है। यह गरीब वर्ग कभी भी घरेलू ऊर्जा की प्राप्ति हेतु तेल एवं कोयले का उपयोग नहीं करते तथा CPR's में उपलब्ध लकड़ियों, गोबर के कंड़ो तथा सूखे पत्तों को इकट्ठा करके अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

जनजातीय क्षेत्रों की CPR's पर निर्भरता सबसे अधिक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों की निर्भरता कुछ कम होती है तथा शहरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण अमीरों की CPR's पर निर्भरता सबसे कम होती है।

ग्रामीण एवं जनजातीय गरीबी का आधारभूत कारण CPR's का असमानतापूर्ण निजीकरण है। इस असमानता पूर्ण निजीकरण से कुछ को लाभ हुआ लेकिन एक बड़े गरीब वर्ग को हानि हुई तथा इस प्रकार अन्याय और असमानता में वृद्धि हुई। यह तथ्य सामने आया है कि सम्पन्न वर्ग ने CPR's के निजीकरण की प्रवृति को बढ़ावा दिया है। इस प्रवृति के कारण गरीबों को CPR's से प्राप्त होने वाले लाभ असामान्य रुप से प्रभावित हुये हैं।

बहुत बार पंचायतों द्वारा श्रेष्ठ सार्वजनिक भूमि निलाम की जाती है जिसे सम्पन्न वर्ग प्राप्त कर लेता है और यह भी देखा गया कि निम्न वर्ग हेतु उपलब्ध सार्वजनिक भूमि भी सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा हड़प ली जाती है। CPR's का यह निजीकरण इन्हें अधिकांश लोगों की पहुँच से बाहर कर देता है तथा इन पर कुछ लोगों का नियंत्रण स्थापित कर देता है। निजीकरण के अतिरिक्त कई अन्य कारणों ने भी ब्व्श्े की गरीबों हेतु उपलब्धता को प्रभावित किया है।

समय के साथ—साथ अनेक कारणों से ब्व्श्े का मात्रात्मक एवं गुणात्मक ह्रास होने के बाद अमीर समुदाय इन पर निर्भर नहीं रहे लेकिन गरीब वर्गों ने श्रम की निम्न अवसर लागत एवं विकल्पों की अनुपलब्धता के कारण CPR's की बदली हुई स्थितियों के साथ सामंजस्य कर लिया तथा CPR's द्वारा प्रदत्ता निम्न गुणवत्ताा वाले विकल्पों को भी स्वीकार कर लिया।

निर्वाह जीविका एवं आर्थिक समानता की दृष्टि से विचार किया जाऐ तो यह स्पष्ट होता है कि ब्व्श्े गरीब वर्ग हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। निर्वाह जीविका का महत्वपूर्ण स्त्रोत मानकर इनका अति विदोहन किया गया है। यह गरीब वर्ग को अगणनीय सेवायें प्रदान करते हैं तथा गरीबी

उम्मुलन में इनकी उपयोगिता सरकारी गरीबी निवारण कार्यक्रमों से कम नहीं है। CPR's ग्रामीण गरीब वर्ग को सत्त जीविका प्रदान करने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों का ह्रासः–यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत भयानक संकट की स्थिति का सामना कर रहे हैं तथा यह मात्रात्मक एवं गुणात्मक रुप से अत्यधिक ह्रास का शिकार हुये हैं। हालांकि माप की जटिलता के कारण CPR's ह्रास का बिल्कुल सही माप संभव नहीं है, लेकिन CPR's से होने वाली प्राप्तियों में कमी इस ह्रास का एक मुख्य संकेत है।

विभिन्न क्षेत्रों में CPR'S से संग्रह किये जाने वाले उत्पादों की संख्या भारतीय स्वतत्रंता के समय 27 से 46 के बीच थी जो वर्तमान में कम होकर 8 से 22 के बीच आ गई है। आज प्राचीन समय की तुलना में अधिक सार्वजनिक भूमि पर अधिक समय में पहले से कम उत्पादों का संग्रह कर पाते है। प्राचीन समय में जहाँ सम्पूर्ण समुदाय ब्च्त्े का उपयोग करके पर्याप्त लाभ प्राप्त करता था वहीं आज निम्नतम गरीब लोग भी CPR's से अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को संतुष्ट नहीं कर पाते हैं। प्राचीन समय में CPR'S की उत्पादकता संबंधी रिकॉर्ड नहीं रखे जाते थे अतः CPR's की उत्पादकता के ह्रास को मापा जाना कठिन है और मुख्यतयाः मौखिक आंकड़ो के आधार पर ही CPR's के ह्रास के अनुमान लगाये जाते हैं। पिछले वर्षों में सामुदायिक चारागाहों, ग्रामीण वनों, पड़ती भूमि, अनाज गहने के मैदान, तालाब एवं पानी के नालों और उनके किनारों की जमीन आदि CPR's के सभी रुपों में कमी दर्ज की गई है। जनसंख्या के CPR's पर बढ़ते दबाव और कुल ग्रामीण भूमि में सार्वजनिक भूमि के घटते अनुपात के आधार पर CPR's में कमी को स्पष्ट किया जा सकता है।

सार्वजनिक भूमि से विभिन्न पेड़ पौधों की प्रजातियों का विलुप्त होना, CPR's से प्राप्त होने वाले उत्पादों की संख्या में भारी कमी आदि भी CPR's के निम्नीकरण को स्पष्ट करने वाले महत्वपूर्ण संकेत है।

सन् 1998 में NSSO के 54वें रौंद में CPR's का राज्यवार आंकलन किया गया। इस रौंद में यह पाया गया कि भारत में औसतन कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 15ः में सार्वजनिक सम्पदा भूमि है जो पंजाब में 1ः से लेकर राजस्थान में 32ः तक विभिन्न राज्यों में भिन्न–भिन्न है। विभिन्न अवधियों में आंकलित CPR's की तुलना करके यह पाया गया कि CPR's में होने वाली कमी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजराज एवं राजस्थान के शुष्क तथा अर्द्धशुष्क प्रदेशों में अधिक गहन रही।

पश्चिमी राजस्थान के संदर्भ में बरारा (1999) के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पिछले वर्षों के दौरान हुई अत्यन्त तथा अनियमित चराई ने ब्च्त्े को बहुत हानि पहुँचाई है। जिससे चारागाहों की उत्पादकता का लगातार ह्रास हुआ है। सामान्यतया पशुओं द्वारा नदियों के किनारे, गोचर भूमि, पड़ती भूमि, चारागाहों आदि पर अव्यवस्थित, अनियमित तथा अकुशल चराई होती है। जिसका परिणाम अन्तः उनके ह्रास के रुप में सामने आता है। आज राजस्थान के शुष्क प्रदेश में चराई भूमि का सबसे बड़ा अवयव गोचर भूमि (80%) अत्यधिक चराई के कारण संकट की स्थिति में है। शुष्क प्रदेश में गैर पशुपालक समुदायों जैसे– ब्राह्मण, जैन, खत्री आदि ने भी पशुपालन को आय के पूरक स्त्रोत के रुप में अपना लिया। इस प्रवृति से पशुधन संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई और चारागाहों के ह्रास तथा मरुस्थलीकरण की प्रवृति को बढ़ावा मिला। इस प्रदेश के लगभग 29ः परिवारों द्वारा यह महसूस किया गया कि पशुधन की घुमक्कड़ चराई पद्धति के कारण मिट्टी का कटाव हुआ, भूमि अधिक कमजोर हो गई और मानवीय दुःखों में वृद्धि हो गई। उच्च पशुधन सघनता ने परिस्थितिकीय तंत्र को घाव पहुँचाने की क्रिया को बढ़ावा दिया है। हमें संतुलित पारिस्थितिकीय तंत्र को बनाए रखना चाहिए। इसके लिए पशुधन संघनता को कुशलतम स्तर पर रखे जाने की आवश्यकता है। सबसे बड़ा त्तव जो CPR's की उत्पादक शक्ति को कम करता है वह पशुधान का कुप्रबंधन है। बरारा ने पाया कि राजस्थान में प्रति पशु उपलब्ध चारागाह भूमि 1951 में 0.82 हैक्टेयर से लगातार कम होकर 1983 में सिर्फ 0.40 हैक्टेयर रह गई। प्रति पशु उपलब्धा चारागाह भूमि में सबसे अधिक भूमि पाली में और सबसे कम कमी झुंझुनू में हुई।

जोधा(1995) ने पाया कि पश्चिमी राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक संपदा क्षेत्र में 17प्रतिशत से 71प्रतिशत तक की कमी हुई है।

तेज गति से बढ़ती मानवीय जनसंख्या ने CPR'S के संकट की स्थिति को अधिक गहन कर दिया है। जनसंख्या घनत्व में तेज वृद्धि ने CPR'S पर अतिक्रमणों को बढ़ावा दिया है। CPR's पर बढ़ते हुये दबाव के कारण गाँवों के आस पास खड़े घास–फूस के जंगल उपज योग्य भूमि में बदलने लगे। ग्रामीण सम्पन्न वर्ग CPR's पर अतिक्रमण करने में अग्रणी रहे।

CPR'S के निजीकरण की प्रक्रिया स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजों द्वारा शुरु कर दी गई जो स्वतंत्रता के बाद भी लगातार जारी है। CPR's के निजीकरण की प्रक्रिया के कारण इनका क्षेत्र लगातार सिकुड़ता जा रहा है। व्यापक स्तर पर सार्वजनिक भूमियों के निजीकरण में मुख्यतया दो बातें सम्मिलित की जाती हैः–

1 विभिन्न विकासात्मक त्तव कल्याणकारी योजनाओं हेतु सरकार द्वारा सार्वजनिक भूमि का वैधानिक आवंटन।

2 CPR's पर हुये अवैधानिक अतिक्रमणों का सरकार द्वारा नियमन।

CPR'Sके निजीकरण ने इनके गहन उपयोग और अन्तः पर्यावरणीय ह्रास को बढ़ावा दिया। यदि निजीकृत CPR'S भी अपनी प्राकृतिक स्थिति में बनी रहती है तो पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचाती है। CPR's ह्रास तथा गरीबी के बीच पाये जाने वाले दुश्चक्र का अंतिम परिणाम भी पर्यावरण ह्रास के रुप में सामने आता हैं। CPR'S ह्रास के कारण पर्यावरण की स्थिति बदतर होती जा रही है। CPR's की समाप्ति का तात्पर्य पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करने वाले एक महत्वपूर्ण साधन की समाप्ति से है। जब तक CPR'S के निजीकरण से संबंधित मुद्दे को प्रत्यक्षतः हल नहीं किया जाता तब तक पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता। CPR's ह्रास से उत्पन्न हो रही भयानक स्थितियों के प्रति पर्यावरविद्, दानदाता और प्रशासनिक तंत्र सचेत हो गया है तथा इनके द्वारा पर्यावरण सुरक्षा को प्रोत्साहित किया जा रहा है। पर्यावरण सुरक्षा हेतु अनेक कल्याण कार्यक्रम तथा संसाधन विकास योजनाऐं आरम्भ की जा रही है।

CPR'S के ह्रास के लिए अनेक त्तव उत्तारदायी है। जिनको संक्षेप में अग्रलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट किया गया हैः–

1 पशुधन संख्या में अत्यधिक वृद्धि ने CPR's के ह्रास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

2 पशुधन संरचना में भी तेजी से परिवर्तन हुआ बढ़ती, ऊन, माँस तथा दूध की घरेलू माँग के कारण लोग घास खाने वाले जानवरों के बजाय चरने वाले जानवर अधिक रखनें लगे जो ब्च्त्े के अति विदोहन तथा ह्रास के कारण बने।

3 मानवीय जनसंख्या में तेज वृद्धि से बाजार स्थितियों में परिवर्तन हुआ जिससें CPR's के उत्तारोतर ह्रास में वृद्धि हुई।

4 स्वतंत्रता के पश्चात् तेजी से चली भूमि सुधारों की प्रक्रिया भी CPR's में ह्रास हेतु उत्तारदायी है। भूमि सुधारों की लंबी श्रृंखला ने सार्वजनिक भूमि के प्रबंधन की आवश्यकता की उपेक्षा की।

5 CPR's के प्रबंधन का परम्परागत औपचारिक तथा अनौपचारिक तंत्र अस्त–व्यस्त होकर भंग हो गया। प्रबंधन की कमजोरियों के कारण CPR'S वर्तमान समय में संकट की स्थिति में खड़े है।

6 CPR उत्पादों की लाभदायकता तथा नियंत्रण के अभाव के कारण CPR's का अतिविदोहन हुआ।

7 CPR' की संकटमय स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय दानदाता संस्थाओं का भी योगदान रहा। इनके द्वारा राज्य की विकासात्मक नीतियों को दिये गये सहयोग ने CPR's पर विपरीत प्रभाव डाला।

8 ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य विकास रणनीति के त्तवों ने भी CPR's को प्रतिकूल रुप से प्रभावित किया। ट्रेक्टरीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप सीमान्त सार्वजनिक भूमियाँ तेजी से कृषि योग्य भूमि में बदलने लगी।

9 ग्रामीण क्षेत्रों का बढ़ता मौद्रिकीकरण, वाणिज्यीकरण तथा बाजार तक बढ़ती ग्रामीणों की पहुँच ने CPR's के प्रति लोगों के दृष्टिकोण पर विपरीत प्रभाव डाला।

10 CPR'S पर संयुक्त स्वामित्व तथा साझे निर्णय की व्यवस्था के कारण भी इनके ह्रास को प्रोत्साहन मिला।

11 अशिक्षा तथा CPR's के प्रति नवपरिवर्तन विरोधी एवं छितराया हुआ दृष्टिकोण भी इनके ह्रास के लिए उत्तारदायी है।

12 पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय कारणों से भी CPR'S की उत्पादकता बहुत अधिक प्रभावित हुई है।

यह पाया गया कि शोधकर्ताओं, नीतिनिर्धारिकों, विकास कार्यक्रम बनाने वालों एवं दानदाता संस्थाओं द्वारा अत्यधिक लाभ देने के बावजूद CPR'S की उपेक्षा तथा अनदेखी के कारण इनको पर्याप्त महत्व नहीं मिला। यह उपेक्षा सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों के प्रति निराशाजनक अवधारणा को स्पष्ट करती है।

CPR's के ह्रास को अनेक रुपों में अभिव्यक्त किया जा सकता है। व्यापक अर्थ में इसे CPR's के आधिक्य में समग्र कमी के रुप में देखा जा सकता है।

परिकल्पना की पुष्टिः–

राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में सार्वजनिक संपदा स्त्रोत के ह्रास पर किये गये इस लघु शोध कार्य से निम्न तथ्य स्पष्ट हुयेः–

1 पश्चिमी राजस्थान में सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र लगातार सिकुड़ता जा रहा है।

2 सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों से होने वाली प्राप्तियों में भारी कमी हुई है।

3 सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों से प्राप्त उत्पादों की गुणवत्ताा का भी ह्रास हुआ है।

4 सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों के ह्रास के व्यापक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं।

शोध कार्य से प्राप्त उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर शोध परिकल्पना ''पश्चिमी राजस्थान में सार्वजनिक संपदा स्त्रोतों का निरंतर ह्रास हो रहा है'' को पूर्णतया स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्षः–

विकसित देशों में दुर्लभ सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोत लगातार ह्रास के कारण विकासशील राष्ट्रों में भी दुर्लभ होते जा रहे हैं। निर्वाह जीविका प्रदान करने, पर्यावरण स्थिरता बनाये रखने, गरीबी–निवारण आदि में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद CPR's संकट की स्थिति का सामना कर रहे हैं। विकास तथा कल्याण कार्यक्रमों के विपरीत प्रभावों, तेज गति से मानवीय जनसंख्या तथा पशुधन संख्या में वृद्धि, आर्थिक एवं संस्थागत परिवर्तनों तथा CPR's कुप्रबंधन की समस्याओं ने सार्वजनिक सम्पदा स्त्रोतों की उत्पादकता तथा क्षेत्र दोनों का ह्रास किया है। यदि राजस्थान के संदर्भ में देखें तो पशुधन कुप्रबंधन CPR's ह्रास का सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

CPR'S के ह्रास से पर्यावरण, संसाधनों के उपयोग, आय वितरण की समानता, कल्याण एवं सशक्तीकरण की नीतियाँ आदि पर विपरीत प्रभाव पड़े। CPR's ह्रास के परिणामस्वरुप ग्रामीण समुदायों की गरीबी में वृद्धि हुई तथा CPR's ग्रामीण गरीबों की पहुँच से बाहर होते गये। CPR's के द्वारा दिये जाने वाले योगदान साझेदारी पूर्ण, आर्थिक समता युक्त, सर्वसमावेशी तथा सत्त विकास की अवधारणा को साकार करते हैं। अतः CPR's का इस प्रकार से उपयोग एवं प्रबंधन किया जाना चाहिए की इनकी भविष्य में सत्तता बनी रहे तथा इन पर निर्भर रहने वाले गरीब लोगों का कल्याण सुनिश्चित हो सके। चूँकि CPR's ह्रास का एक मुख्य कारण इनका कुप्रबंधन है, अतः हमें यह विचार करना होगा कि इनके प्रबंधन में किस तरह के परिवर्तन किये जायें जिससें गरीब समाज इनका उपयोग अपनी जीविका सुरक्षा बढ़ाने में कर सके।

यदि ग्रामीण अर्थवयवस्था के महत्वपूर्ण अवयव CPR's को बनाऐ रखना है तो इनके उपयोग के समतामूलक तथा कुशलतम तरीकों को प्रोत्साहन देते हुए इन्हें सुरक्षित करने वाली नीतियों का निर्माण कर इनकी उत्पादकता बढ़ाने हेतु प्रयत्न करने चाहिए।

REFERENCESAA

1 Barara, L.P. (1999), "Man in the desaaert; Droughaaat, Desaaertification and Indigenous knowledge for Sus tainable Development." Scientific Publishers, Jodhpur (India).

2 Jodha, N.S. (1995), "Common property resaaourcesaa and the dynamics of rural poverty in India's dry regions', Unasylha.

3 Jodha, N.S. (1995), 'Common property resaaourcesaa and the environmental context : Role of biophysical versus social stresaasesaa', Economic and Political Weekly.

4 Kedekodi, K. Gopal (2004), Common property Resaaourcesaa Management : Reflection on Theory and the Indian Experience. Oxford University Presaas, New Delhi.

5 Robbins, Paul, GOATS AND GRASSESAA IN WESAATERN RAJASTHAN : INTER PRETING CHANGE. www. nri.com

6 Sangati, www.Sangati.wordpresaas.com.